5.9. भारत में तुर्कों की सफलता के कारण *(Causes of the Turkish Success in India)*

तुर्क आक्रमणकारियों ने भारतीय राजाओं को पराजित कर उनके राज्यों पर अपना आधिपत्य किया। यद्यपि भारतीय राजपूत राजाओं ने तुर्क आक्रमणकारियों का वीरतापूर्वक युद्ध में सामना किया, तथापि उन्हें पराजित ही होना पड़ा। भारत में तुर्क आक्रमणकारियों की सफलता और राजपूत राजाओं की असफलता के लिए अनेक कारण सुझाए गए हैं। इतिहासकार हसन निज़ामी और मिनहाज-उस-सिराज तुर्क विजय को 'दैवी कृपा' मानते हैं। कुछ विद्वान तुर्की विजय का कारण तुर्की अश्वारोही सेना की कुशलता तथा भारतीय सामंती सेना की दुर्बलता मानते हैं। सर यदुनाथ सरकार के अनुसार तुर्कों की विजय के लिए तीन कारण मुख्य रूप से उत्तरदायी थे। तुर्कों में सामाजिक समानता और भाईचारे की भावना, युद्ध में मृत्युभय से मुक्त होकर लड़ना तथा नशे से परहेज रखना। अनेक अँगरेज इतिहासकारों, यथा एलफिंस्टन, लेनपूल, स्मिथ आदि का विचार है कि तुर्कों की विजय इसलिए हुई कि तुर्क युद्धप्रिय व्यक्ति थे तथा

भारतीय शांतिप्रिय। ठंडे प्रदेश के निवासी और मांसाहारी होने से भारतीयों की अपेक्षा तुर्क अधिक शक्तिशाली और कुशल योद्धा थे। तुर्कों का धार्मिक जोश भी उनकी सफलता के लिए उत्तरदायी था। इनमें से अनेक मत पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं। वास्तविकता यह है कि तुर्कों की विजय और राजपूतों की पराजय के लिए अनेक राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सैनिक कारण उत्तरदायी थे।

राजनीतिक कारण : राजनीतिक विश्रृंखलता एवं प्रशासनिक दुर्बलता—राजपूत राज्यों की पराजय का एक प्रमुख कारण भारत की तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति थी। संपूर्ण भारत विभिन्न राज्यों में विभक्त था। इन राज्यों में आपसी प्रतिद्वंद्विता एवं विद्वेष की भावना विद्यमान थी। ये राज्य एक-दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखते थे, सदैव आपस में संघर्षरत रहते थे तथा एक-दूसरे को नीचा दिखाने एवं पराजित करने में अपनी शक्ति का अपव्यय करते थे। इन राज्यों में राजनीतिक दूरदर्शिता का सर्वथा अभाव था। अतः विपत्ति के समय भी ये राज्य पूर्णतया संगठित नहीं हो सके। सामंती व्यवस्था ने इन राज्यों को और भी दुर्बल बना दिया था। प्रत्येक सामंत केंद्रीय शक्ति को कमजोर बनाने और अपनी स्थिति मजबूत करने की ताक में लगा रहता था। प्रशासनिक व्यवस्था भी असंतोषजनक थी। वंशानुगत राजतंत्रात्मक व्यवस्था के कारण प्रायः ऐसा व्यक्ति भी राजा बन जाता था, जिसमें योग्यता का अभाव होता था। राजा सेना, प्रशासन और धन के लिए अपने अधीनस्थ सामंतों पर ही आश्रित रहता था। ऐसी व्यवस्था में विघटनकारी तत्त्व मौजूद थे, जो मौके का लाभ उठाकर राजा के विरुद्ध विद्रोह कर देते थे। फलतः, राजा की सारी शक्ति इन सामंतों को नियंत्रित करने में ही लगी रहती थी। वर्णव्यवस्था के दोष भी राज्य को प्रशासनिक स्तर पर खोखला कर रहे थे। प्रशासन तथा सेना के उच्च पद अधिकतर ब्राह्मणों एवं राजपूतों को वंशानुगत आधार पर प्राप्त होते थे। फलस्वरूप, अन्य वर्ग तथा जाति के लोग राज्य के प्रति उदासीन हो गए तथा अयोग्य व्यक्ति उच्च पद प्राप्त करते चले गए। परिणामतः, राज्य को कभी जनसमर्थन प्राप्त नहीं हो सका। क्षेत्रीयता की भावना के कारण राज्यविशेष का राजा सिर्फ अपने राज्य की रक्षा को ही अपना उत्तरदायित्व मानता था, उसमें देशप्रेम की भावना का सर्वथा अभाव था। भारतीय राजाओं ने सीमा की सुरक्षा और गुप्तचरों की पर्याप्त व्यवस्था भी नहीं की। दूसरी ओर, तुर्कों में राजा योग्यता के आधार पर बनता था, उसे सभी वर्गों का समर्थन प्राप्त था। अतः, भारतीय राजनीतिक दुर्बलता का लाभ उठाकर भारत में तुर्कों ने सफलता प्राप्त की।

सामाजिक कारण : वर्णव्यवस्था के दुष्परिणाम—वर्णव्यवस्था एवं जातिप्रथा पर आधारित भारतीय सामाजिक दुर्बलता ने भी राजपूतों की पराजय में योगदान दिया। संपूर्ण भारतीय समाज विभिन्न जातियों और वर्गों में विभक्त था, अस्पृश्यता की भावना एवं उच्च वर्गवालों द्वारा निम्न वर्गों के शोषण की प्रक्रिया ने भारतीय समाज को अंदर से खोखला कर दिया था। राजपूत अपनी जातिगत, वंशगत और राजनीतिक श्रेष्ठता के कारण अहंकारी, झगड़ालू और जिद्दी प्रवृत्ति के बन गए थे। उनके सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन में अनेक बुराइयाँ (शराबखोरी, [illegible] बहुविवाह, सतीप्रथा, जुआबाजी, दिखावापन इत्यादि) प्रविष्ट हो गई थीं। इसका दुष्प्रभाव राजनीति, प्रशासन और सेना पर भी पड़ा। राजपूतों में पृथकतावादी दृष्टिकोण था। [illegible] अपने-आपको सर्वश्रेष्ठ मानकर बाहरी देशों के राजनीतिक एवं सैनिक विकास से अनभिज्ञ रहने की प्रवृत्ति उनके लिए घातक बन गई। इतना ही नहीं, सामाजिक विभेद के कारण भारतीय जनता में देशप्रेम की भावना का अभाव था। फलतः, राजपूतों को जनता का समर्थन नहीं मिल सका। राजपूतों द्वारा जनकल्याणकारी कार्यों की उपेक्षा ने भी उन्हें जनसमर्थन से [illegible]

[illegible]

सामना नहीं कर सकता। यही बात राजपूतों के साथ भी हुई। भारतीयों की दुर्बलता का लाभ तुर्कों ने उठाया। प्रो॰ निजामी ने ठीक ही लिखा है, ''भारतीयों की पराजय का मुख्य कारण उनकी सामाजिक व्यवस्था और अन्यायपूर्ण जाति-भेद थे, जिन्होंने उनके संपूर्ण समाज को अरक्षित और दुर्बल बना दिया। जाति-भेद और आडंबरपूर्ण बंधनों ने उनकी सामाजिक और राजनीतिक एकता की भावना को पूर्णतया नष्ट कर दिया।''

धार्मिक कारण : नियतिवाद और भाग्यवाद पर आश्रित होना—धार्मिक [illegible] भी तुर्कों की विजय और राजपूतों की पराजय हुई। तुर्क आक्रमणकारी धर्म के [illegible]

युद्ध करते थे। नए राज्यों की विजय के अतिरिक्त उनका उद्देश्य व्यापक रूप से इस्लामधर्म का प्रचार करना भी था। इसलिए, वे पूरे मनोयोग और एकता के साथ युद्ध करते थे। इसके विपरीत, भारतीय धर्म विभिन्न संप्रदायों में विभक्त था। बौद्ध एवं जैनधर्म अहिंसा की नीति का प्रचार करते थे, तो ब्राह्मणधर्म कर्म की अपेक्षा भाग्य को अधिक महत्त्वपूर्ण मानता था। ब्राह्मणधर्म के संरक्षक हिंदू राजा नियतिवाद और भाग्यवाद पर विश्वास कर अकर्मण्य एवं साहसहीन हो गए जिसका दण्ड उन्हें तुर्कों के हाथों भुगतना पड़ा।

राजपूतों की सैनिक दुर्बलता—भारत पर तुर्की-विजय का प्रधान कारण तुर्कों की सैनिक श्रेष्ठता थी। तुर्कों की रणनीति तथा युद्धप्रणाली राजपूतों की तुलना में अधिक अच्छी थी। तुर्की सेना में मुख्य भूमिका बख्तरबंद घुड़सवारों तथा धनुर्धर अश्वारोहियों की रही, जो युद्धक्षेत्र में तीव्र गति से दुश्मनों पर टूट पड़ते थे। तुर्कों के पास विकसित अस्त्र-शस्त्र, दुर्ग-भेद करनेवाले हथियार (**मंजनिक** और **अर्रादा**) भी थे। तुर्कों की व्यूहरचना भी अच्छी थी। आवश्यकतानुसार वे रणक्षेत्र से भागने को तत्पर रहते थे तथा सेना की एक टुकड़ी को सदैव अंतिम समय के लिए सुरक्षित रखते थे। तुर्कों की सैनिक गुप्तचर व्यवस्था भी उत्तम कोटि की थी, उनके सेनापति या सुल्तान युद्ध में सामने नहीं आकर दूर से ही सेना का संचालन करते थे, वे आक्रामक नीति का पालन करते एवं अपनी सुविधा के अनुसार रणक्षेत्र का चुनाव करते थे। आक्रमणकारी होने की वजह से तुर्कों में उमंग और जोश भी अधिक था। इसके विपरीत, राजपूत सेना सामंती व्यवस्था के दुर्गुणों से बुरी तरह ग्रस्त थी। वीर योद्धा होने के बावजूद राजपूतों में रणकुशलता नहीं थी। राजपूत बिना कुछ सोचे-समझे युद्ध करते थे। आवश्यकता पड़ने पर भी युद्धक्षेत्र से हटना वे अपना अपमान समझते थे तथा युद्ध में वीरगति प्राप्त करना ही उनका ध्येय रहता था। उनके पास अच्छे घुड़सवारों की कमी थी, वे तलवार और हाथी के बल पर ज्यादा आश्रित थे। युद्ध में वे अपनी पूरी सेना एक ही साथ उतार देते थे, आमने-सामने के युद्ध में विश्वास करते थे तथा स्वयं ही युद्ध करते थे। फलतः, सेनापति या राजा के मारे जाने के साथ ही सारी सेना की हिम्मत टूट जाती थी। आत्मरक्षात्मक युद्ध करने के कारण राजपूतों में तुर्कों जैसा जोश भी नहीं था। उनके पास गुप्तचरों की भी कमी थी। राजपूत युद्ध में अनीति का सहारा नहीं लेते थे। तुर्क विजय प्राप्त करने के लिए प्रत्येक नीति-अनुचित उपायों का सहारा लेते थे। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि सामंती सेना राजा के प्रति पूर्णरूप से निष्ठावान नहीं थी। इन सैनिक दुर्बलताओं ने तुर्की-आक्रमणकारियों की विजय को सुगम बना दिया।